खड़ी बोली का उद्ग्म व विभिन्न भाषाओं का उस पर प्रभाव

अर्चना कातुरे बुड़ेकर, मध्यांचल प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, भोपाल, म.प्र.
डॉ. छाया श्रीवास्तव, प्रोफेसर कला एवं मानविकी संकाय, मध्यांचल प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, भोपाल, म.प्र.

सारांशः

खड़ी बोली हिंदी का एक उपसमुच्चय है, और यह अध्ययन यह देखता है कि यह कहां से आया और यह अन्य भाषाओं के प्रभाव में भाषाई रूप से कैसे विकसित हुआ। खड़ी बोली अपनी विशिष्ट विशेषताओं और ऐतिहासिक महत्व के कारण हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण रही है। इस अध्ययन का उद्देश्य ऐतिहासिक स्रोतों, साहित्यिक कार्यों और भाषाई शोधों की जांच के माध्यम से खड़ी बोली के विकास और इसकी संरचना और शब्दकोश को प्रभावित करने वाले भाषाई प्रभावों पर प्रकाश डालना है।

वाक्यांशः खड़ी बोली, भाषाओं, प्रभाव,

प्रस्तावना

खड़ी बोली हिन्दी अज राजभाषा और साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित है। खड़ी बोली हिन्दी का इतिहास भी पुराना है। खड़ी बोली में भी साहित्यिक रचनाएँ ब्रजभाषा और अवधी के साथ ही प्रारम्भ हो गई थी। वर्तमान समय में जिसे हम मानक हिन्दी के रूप में जानते हैं, वह खड़ी बोली का ही परिवर्तित रूप है। खड़ी बोली के सन्दर्भ में प्रायः यह भ्रम रहा है कि इसका साहित्यिक भाषा के रूप में विकास अवधी और ब्रजभाषा के बाद उन्नीसवीं सदी में हुआ वास्तविकता यह है कि पुरानी हिन्दी के बाद जिस समय हिन्दी की अन्य बोलियाँ विकसित हुई, ठीक उसी समय खड़ी बोली का भी विकास होने लगा था।

खड़ी बोली का जन्म ग्यारहवीं शताब्दी में अपभ्रंश से स्वीकार किया जाता है। पहले इसे हिंदी हिंदवी या दक्खिनी हिंदी के नाम से जाना जाता था, बाद में इसे खड़ी बोली नाम से पुकारा गया। सर्वप्रथम लल्लूजी लाल एवं सदल मिश्र ने 1803 ई० में इसे 'खड़ी बोली' कहा। वस्तुतः खड़ी बोली दिल्ली व मेरठ के आसपास बोली जाने वाली बोली है।" सन् 1860 संवत में लल्लू लाल ने प्रेमसागर की रचना की तथा उन्होंने भी भाषा के रूप में दिल्ली–आगरे की खड़ी बोली का प्रयोग किया।" आधुनिक काल से पहले राजस्थानी, मैथिली, अवधी व ब्रजभाषा में साहित्यिक रचनाएँ लिखी जा रही थी, परंतु इसका अर्थ यह नहीं था कि उस समय खड़ी बोली जन्मी ही नहीं थी। वास्तव में बोली के रूप में खड़ी बोली आधुनिक काल से पहले भी विद्यमान थी। बोली के रूप में वह भी उतनी ही पुरानी है जितनी हिंदी क्षेत्र की अन्य बोलियाँ।

परंतु आधुनिक काल में खड़ी बोली को सर्वप्रथम गद्य की भाषा और तत्पश्चात् पद्य की भाषा के रूप में स्वीकृति मिली।[1]

हिंदी के रूप में जानी जाने वाली आधुनिक भाषा खड़ी बोली नामक एक पुरानी भाषा से विकसित हुई है। खरी बोली नाम की उत्पत्ति पर बहस हुई है। तीन सबसे सामान्य दृष्टिकोण हैं: (1) कथन सटीक है। उनकी धार्मिक बयानबाजी के कारण उनका नाम बदलकर खड़ी बोली कर दिया गया। (2) उन्हें खड़ी बोली कहा जाता था क्योंकि उनकी भाषा ब्रजभाषा की तुलना में बहुत कर्कश थी। (3) मेरठ क्षेत्र की पड़ी बोली को लश्करों में उपयोग के लिए खड़ी बोली में बदल दिया गया था, इस प्रकार यह नाम। यद्यपि इस शब्द का आधुनिक, स्वीकृत संस्करण उन्नीसवीं सदी तक सामने नहीं आया था, इसके पूर्ववर्ती नौवें के रूप में प्रकट हुए थे।[2]

भाषा संचार और अभिव्यक्ति का एक शक्तिशाली साधन है, और यह व्यक्तिगत और समूह पहचान दोनों के विकास और सामाजिक बंधनों के रखरखाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। खड़ी बोली हिंदी का एक महत्वपूर्ण रूप है, और इसकी शुरुआत और विकास भाषाओं की विशाल श्रृंखला के कारण आकर्षक हैं जिन्होंने इसे प्रभावित किया है। खादी बोली की उत्पत्ति और विभिन्न भाषाई परंपराओं के साथ बातचीत भारतीय उपमहाद्वीप के जटिल भाषाई टेपेस्ट्री को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

दक्खिनी हिंदी से भिन्न खड़ी बोली में 19वीं शताब्दी से पूर्व जो कुछेक गद्य रचनाएँ मिलती है उनमें सबसे पहली रचना गंग कवि द्वारा रचित चन्द छन्द बरनन की महिमा मानी जाती है। परंतु इसकी प्रामाणिकता पर भी संदेह है। इसके बाद की गद्य रचना जटमल द्वारा रचित गोरा बादल की कथा है। इसकी खड़ी बोली राजस्थानी पुट लिए हुए है। भक्तिकाल में खड़ी बोली में रचित जो गद्य रचनाएँ मिलती हैं उनमें राजस्थानी, ब्रजभाषा और पंजाबी का मिश्रण मिलता है रीतिकाल में खड़ी बोली गद्य की अनेक मौलिक एवं अनूदित इनमें रामप्रसाद निरंजनी द्वारा रचित सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रचना मानी जाती है। कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की गई थी जिसका उद्देश्य ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारियों को शिक्षा व भाषा ज्ञान प्रदान करना था। गिलक्राइस्ट को हिंदुस्तानी विभाग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। वे रोमन और फारसी लिपि, रचनाएँ मिलती हैं। 'भाषा – योग– वशिष्ट.' सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रचना मानी जाती है।[3]

[1] आनंद ज्योत्स्ना, ''खड़ी बोली और साहित्यिक भाषा के रूप में उसका विकास'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिंदी रिसर्च, 7(4), 2021, पृष्ठः 154–155।
[2] हिन्दीकुंज, ''खड़ी बोली हिंदी का उद्भव व विकास'', अधिकारिक बेवसाइटःीजजचेरूध्ध्णीपदकपानदरण्बवउध्2018ध्01धींकप.इवसपी.पदकपणीजउस
[3] आनंद ज्योत्स्ना, ''खड़ी बोली और साहित्यिक भाषा के रूप में उसका विकास'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिंदी रिसर्च, 7(4), 2021, पृष्ठः 154–155।

खड़ी बोली का प्रारम्भिक प्रयोग

खड़ी बोली की आरम्भिक प्रवृत्तियाँ सिद्ध एवं नाथ साहित्य में मिलती हैं। ''ण'' स्थान पर ''न'' का प्रयोग, अकारान्त– एकारान्त एवं आनुनासिकता जैसे भाषिक प्रयोग सिद्धों एवं नाथों के साहित्य में दिखाई देते हैं। खड़ी बोली को काव्य– भाषा के रूप में अपनाने का प्रथम श्रेय सूफी सन्त शेख फरीद शकरगंज को दिया जा सकता है। अमीर खुसरो, जिनका वास्तविक नाम अबुल हसन था, खड़ी बोली के पहले प्रमुख कवि माने जाते हैं। यह बात आश्चर्यजनक लगती है कि 14 वीं शताब्दी के आरम्भ में वे ऐसी भाषा का प्रयोग कर रहे थे, जैसी खड़ी बोली आधुनिक काल में दिखती है। इसका एक बड़ा कारण यह है कि आधुनिक काल में खड़ी बोली का विकास जिस प्रकार हिन्दवी और फ़ारसी की अन्तर्क्रिया से हुआ है, खुसरो लगभग वैसे ही वातावरण में रहकर काव्य–रचना कर रहे थे। इसके बावजूद 14वीं सदी में लिखित उनकी खड़ी बोली आज की खड़ी बोली के इतनी अधिक निकट है कि आश्चर्य में डाल देती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी इस बात को रेखांकित किया क्या उस समय भाषा घिसकर इतनी चिकनी हो गई थी, जितनी अमीर खुसरो की पहेलियों में मिलती है। (हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 39) उनकी पहेलियों में खड़ी बोली अपने आधुनिक एवं शुद्ध रूप में नजर आती है.–

एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा ।

चारों ओर वह थाली फिरे, मोती उससे एक न गिरे।।

खुसरो की कविताओं में खड़ी बोली का दूसरा रूप वहाँ दिखाई देता है, जहाँ वे खड़ी बोली और ब्रजभाषा के आरम्भिक रूपों को मिला देते हैं।

इन शैलियों के अतिरिक्त अमीर खुसरो ने ऐसी रचनाएँ की हैं, जिनमें खड़ी बोली, ब्रजभाषा और फ़ारसी एक ही प्रवाह में शामिल हो गई हैं। कुल मिलाकर यह मानना पड़ता है कि अमीर खुसरो भाषिक प्रयोगों में अपने समय तथा भविष्य की भाषिक प्रवृत्तियों का सुन्दर समन्वय स्थापित कर पा रहे थे।

इसके बाद सन्त साहित्य में भी खड़ी बोली के आधार पर साहित्यिक रचनाएँ दिखाई देती हैं। कबीर की भाषा को तो पँचमेल खिचड़ी कहा ही गया। इनके अलावा अन्य सन्तों ने भी खड़ी बोली के शब्दों को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है। कहीं–कहीं तो इन सन्तों की रचनाएँ मूलतः खड़ी बोली की ही प्रतीत होती हैं। जैसे–

जो बिछुड़े हैं पियारे से भटकते दर–बदर फिरते।

हमार यार है हममें हमन को इन्तजारी क्या।।

उपर्युक्त उदाहरण में भाषिक संरचना मूलतः खड़ी बोली पर आधारित है, जबकि हमने जैसे प्रयोग इसके पूर्वीपन को तथा दर–बदर जैसे प्रयोग फ़ारसी प्रभाव को स्पष्ट करते हैं। सतरहवीं शताब्दी के सन्त मलूकदास के साहित्य में भी यह प्रवृत्ति दिखाई देती है–

अजगर करे न चाकरी, पंछी करै न काम।

दास मलूका कह गए, सबके दाता राम ।।

इसी प्रकार रीतिकालीन काव्य में दरिया साहब, पलटू साहब तथा यारी साहब जैसे सन्त कवि जिस भाषा में लिख वह खड़ी बोली के ही निकट थी।

अकबर के दरबारी कवि अब्दुर्रहीम खानखाना की रचना मदनाष्टक में खड़ी बोली का स्पष्ट प्रयोग दिखाई देता है। उसकी भाषा आज की खड़ी बोली जैसी ही है। रहीम का एक उदाहरण द्रष्टव्य है, जिसमें खड़ी बोली मिश्रित ब्रजभाषा देखी जा सकती है–

रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून।

पानी गए न ऊबरे मोती मानुस चून।।

रहीम ने खड़ी बोली में पर्याप्त प्रयोगधर्मिता का परिचय दिया है।[4]

खड़ी बोली की विशेषताएँ

खड़ी बोली की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- खड़ी बोली आकारान्त प्रधान है। इसमें अधिकांशः आकारान्त शब्दों का प्रयोग मिलता है, जैसे – करता, क्रिया, खोटा, घोड़ा आदि ।
- खड़ी बोली में मूर्धन्य ल का प्रयोग मिलता है, जिसका मानक हिन्दी में अभाव है, जैसे– जंगल, बाल आदि ।
- खड़ी बोली में द्वित्व व्यंजनों का प्रयोग प्रचुरता से होता है, जैसे– बेट्टी, गाड़ी, रोट्टी, जात्ता आदि ।
- खड़ी बोली में मानक हिन्दी के न, भ के स्थान पर क्रमणः ण, ब का प्रयोग होता है, जैसे–खाणा, जाणा, कबी, सी आदि।

[4]सिह ओमप्रकाश, ''साहित्यिक भाषा के रूप में खड़ी बोली का विकास'' पाठशाला, 2020। अधिकारिक बेवसाइटः https://epgp.inflibnet.ac.in/

- खड़ी बोली की क्रिया रचना में मानक हिन्दी से बड़ा साम्य है।
- कतिपय परिवर्तनों के साथ मानक हिन्दी क्रिया रूपों का प्रयोग खड़ी बोली में मिलता है, जैसे– चलता है > चले हैं।
- निश्चयार्थक भूतकाल में खड़ी बोली में श्याश लगाया जाता है, जैसे– बैठा > बैठ्या, उठा > उठ्या आदि ।।[5]

साहित्य समीक्षा

शिक्षा रानी (2018)[6] ने अपने अध्ययन में स्पश्ट किया है कि भारतवर्ष की प्रमुख भाषा हिन्दी का उद्भव और विकास संस्कृत से माना जाता है, परन्तु संस्कृत से हिन्दी तक की विकास यात्रा में कई तरह के परिवर्तन आते रहे। कभी वैदिक संस्कृत, कभी पालि कभी प्राकृत और कभी अपभ्रंश के तीन रूपों (सौरसेनी, मागधी एवं महाराष्ट्री) में भोलानाथ तिवारी सौरसेनी से हिन्दी की जन्मतिथि सातवीं, नवीं व दसवीं शताब्दी मानते हैं, जबकि रामचन्द्र शुक्ल ग्यारहवीं । हिन्दी शब्द पहले स्थानवाची था, बाद में भाषावादी बन गया क्योंकि संस्कृत का "स'' फारसी में 'ह' होने के कारण सिन्धु, सिंध और सिंधी फारसी में हिंदू, हिंद और हिंदी हो गया। वास्तव में फारसी के निवासियों द्वारा हिंदी नाम प्रवृत हुआ है।

सुजाता एस. मोदी (2014)[7] ने अपने अध्ययन में स्पश्ट किया है कि हिंदी भाषा की पत्रिका, सरस्वती (1900–82), जो सदी के मोड़ पर भारत में उभर रही थी। इसने कला और साहित्य के बीच एक अभिन्न संबंध को स्थापित किया। इस निबंध में, मैं पत्रिका के संपादक एमपी द्विवेदी द्वारा अपने काव्य के प्रतिरोध के बीच साहित्यिक अधिकार स्थापित करने के लिए लागू की गई काव्य कार्य सूची की जांच करती हूं । विशेष रूप से, मैं संयुक्त साहित्यिक – दृश्य कथा रूपों के माध्यम से साहित्यिक प्राधिकरण स्थापित करने में द्विवेदी के शुरुआती दो प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करती हू: संपादकीय के माध्यम से साहित्यिक आलोचना, और राजा रवि वर्मा के चित्रों और कविता के आधुनिकीकरण से बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में कई क्षेत्रों में साहित्य और कला के संवादात्मक महत्व को इंगित है ।

[5] सुनीता शर्मा, ''खड़ी बोली की व्याकरणिक विशेषताएं'', भाषा और साहित्य, 12(2), 2019, 135–142।
[6]रानी, शिक्षा, ''हिन्दी भाषा का अतीत एवं वर्तमान तथा इक्कीसवीं शताब्दी में हिन्दी भाषा का वैश्विक स्वरूप'', जर्नल ऑफ एडवांसेज एंड स्कॉलरली रिसर्चेस इन अलाइड एजुकेशन, 15(9), 2018, पृष्ठः 631–634।
[7]मोदी, सुजाता एस., ''आधुनिक हिंदी मे ं साहित्यिक सत्ता के लिए दृश्य रणनीतियाँ'' साउथ एशियाः जर्नल ऑफ साउथ एशियाई स्टडीज', 37(3), 2014, पृष्ठः 474–490।

पायोत्र बोरेक (2013)[8]ने अपने अध्ययन में स्पश्ट किया है कि आधुनिक साहित्य का इतिहास कई पश्चिमी श्रेणियों में से एक, जो दक्षिण एशियाई साक्ष्यों के लिए अनुपयुक्त साबित होती है। हिन्दी साहित्यिक परम्पराओं के सन्दर्भ में इस अवधारणा के तर्क ने बहुत बड़ी समस्या पैदा कर दी। उनमें से एक (16वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी) आनुवंशिक रूप से विभिन्न भाषाओं में लिखे गए साहित्य के इतिहास से भरी हुई है। साहित्यिक संस्कृतियों की नई अवधारणा के साथ इस समस्या का समाधान किया जा रहा है, साहित्य के इतिहास की पुरानी श्रेणी को बदलना चाहिए । डिग्लोसिया की समाजशास्त्रीय अवधारणा का विस्तार क सैद्धांतिक औचित्य प्रदान कर सकता है और इस तरह के सुधार के लिए बताए गए क्षेत्र में भाषाई विविधता द्वारा आई समस्याओं के एक चुनिंदा रेखाचित्र के बाद यह प्रारंभिक सुझाव दिया गया है।

अंजू बाला (2013)[9] ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया है कि गघ आधुनिक काल की देन है। यह परिवर्तन खड़ी बोली से हुआ । आधुनिक काल में साहित्य में जो परिवर्तन हुए उसके कारण उस समय के समाज में निहित है। इस परिवर्तन के तीन मुख्य कारण माने जाते है । पहला भारत में ब्रिटिश राज्य की स्थापना दूसरा पशिचम विचारों तथा भावों का आयात, अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव द्य आचार्य रामचन्द्र भाक्ल आधुनिक काल को 'गद्य' नाम दिया है। उनका कहना है कि ब्रजभाषा में भी गद्य लिखा गया। वह भाषाएँ एवं टीकाएँ थी। ब्रजभाषा में जो गद्य था वह आधुनिक गद्य नहीं था । उसमें मध्यकालीनता है, इस कारण या तो वे वार्ताएं है या भाष्य या टीका है। गद्य आधुनिक युग की देन है। आधुनिक युग में जो गद्य लिखा गया। उसकी भाषा खड़ी बोली थी। हालाकि उस समय कविता ब्रज में थी । कवियों में यह बेचौनी थी कि कविता ब्रज में और 'गद्य' खड़ी बोली में लिखा जा रहा था । आधुनिक काल में दो भाषाएँ थी एक ब्रजभाषा और दूसरी खड़ी बोली ब्रजभाषा मथुरा, वृंदावन, मिर्जापुर आदि तथा खड़ी बोली– मेरठ, हरियाणा, दिल्ली आदि में बोली जाती थी । जब बोलियों अपने क्षेत्र से बाहर निकलती है तो उनका क्षेत्र विस्तृत हो जाता है तो इस कारण गद्य का प्रारम्भ खड़ी बोली में हुआ । खड़ी बोली भाषा बन गई और उसने ब्रजभाषा को अपदस्त कर दिया। इस कारण आधुनिक युग में खड़ी बोली ने अपना वर्चस्व स्थापित किया हिन्दी नए चाल में ढला या नये चाल की हिन्दी १६७३ का यह प्रसिद्ध मुहावरा था ।

दिवाकर मिश्रा एवं कालिका बाली (2011)[10] ने अपने अध्ययन में स्पश्ट किया है कि डायलेक्टिक विविधताएं किसी भाषा की ध्वनियों में समकालिक और ऐतिहासिक परिवर्तन दोनों के लिए महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करती हैं। पिछले कई दशकों में हिंदी की बोलियों का कोई तुलनात्मक अध्ययन नहीं हुआ है। इस

[8]बेरेक, पायोत्र., ''आधुनिक हिंदी में साहित्यिक सत्ता के लिए दृश्य रणनीतियाँ'' 'साउथ एशियाः जर्नल ऑफ साउथ एशियाई स्टडीज',(15), 2013, पृष्ठः 249–264।

[9]बाला अंजू, ''हिन्दी गद्य का उदय और नवजागरण'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन आल सब्जेक्ट्स इन मल्टी लैंग्वेजेज, 1(8), 2013, पृष्ठः49–55।

[10]मिश्रा, दिवाकर एवं बाली, कालिका, ''हिंदी की बोलियों का एक तुलनात्मक ध्वन्यात्मक अध्ययन'' इंटरनेशनल कांग्रेस ऑफ फोनेटिक साइंसेज,17(21), 2011, पृष्ठः1390–1393।

पत्र में हम हिंदी की सात प्रमुख बोलियों अवधी, बघेली, भोजपुरी, बुंदेली, हरियाणवी, कन्नौजी और खड़ी बोली का फोनोलॉजिकल विवरण प्रस्तुत करते हैं। जो टेलीफोनिक वार्तालाप डेटा के अवलोकन और विश्लेषण पर आधारित है। हमारा मानना है कि ये प्रारंभिक परिणाम बोलियों की अधिक व्यापक और विस्तृत तुलना के लिए एक शुरुआती बिंदु के रूप में होंगे और भाषा के विकास के साथ – साथ हिंदी की समकालिक विविधताओं के लिए अंतर्दृष्टि प्रदान करेंगे।

ए. अनीश (2010)[11] ने अपने अध्ययन में स्पश्ट किया है कि राष्ट्र उत्पत्ति या उसके मूलभूत पहलुओं को केंद्रित करने के लिए है। यह लेख बताता है कि किस प्रकार राष्ट्र कुछ प्रकल्पित जातीय, भाषाई, या धार्मिक नींवों से बाहर निकलते हैं, यह तर्क देने के लिए सामाजिक – संज्ञानात्मक ढांचे का आकार लेती हैं जो राष्ट्रीय सूचनाओं को परिभाषित करती हैं। भारत और पाकिस्तान के गठन पर करीब से नजर डाले तो यह पता लगता है कि कैसे हिंदी और उर्दू को दो अलग–अलग राष्ट्रीय भाषाओं के रूप में एक ही बोली से अलग किया गया था। उदाहरणतः उन्नीसवीं सदी के दक्षिण एशिया की परस्पर विरोधी राष्ट्रीय आकांक्षाओं के दबाव में मतभेदों को बढ़ा–चढ़ाकर पेश करने के लिए, हिंदी खाड़ी बोली के संस्कृतकृत संस्करण के रूप में विकसित हुई, जबकि उर्दू अपने फारसी रूप रूप में परिपक्व हुई । क्रमशः देवनागरी और फारसी लिपियों ने उन्हें अपना विशिष्ट रूप प्रदान किया ।

रमा कण अग्निहोत्री (2009)[12] ने अपने अध्ययन में स्पश्ट किया है कि लोग जिस भाषा(ओं) को बोलते हैं उसके बारे में काफ़ी कुछ जानते हैं। वे जानते हैं कि शब्दों को बनाने के लिए ध्वनियों को एक साथ कैसे रखा जाए और शब्दों को एक साथ रखकर ऐसे वाक्य बनाए जाएं जो हमेशा व्याकरणिक और स्वीकार्य हों; अक्सर वे सूक्ष्म और लाक्षणिक तरीकों से भाषा का प्रयोग करते हैं। यह ज्ञान, हालांकि अत्यंत सारगर्भित, समृद्ध और जटिल है, सचेतन नहीं है। यह सच है चाहे आप अर्जित भाषा को भाषा कहें या बोली। यह बिना किसी स्पष्ट शिक्षण के चार साल की उम्र से पहले हर बच्चे द्वारा आसानी से हासिल कर लिया जाता है; हालांकि समाजीकरण की सामान्य प्रक्रियाएं भाषा अधिग्रहण के केंद्र में हैं। कुछ स्तर पर लोग यह भी जानते हैं कि भाषा के बिना भाषा या संस्कृति की कोई प्रणाली मौजूद नहीं हो सकती है। फिर भी वही लोग भाषा के मुद्दे को उदासीनता और अपरिपक्वता से लेते हैं। उनके लिए, एक 'शुद्ध और मानकीकृत' भाषा और 'स्थानीय रूप से बोली जाने वाली देहाती' बोली के बीच एक बुनियादी अंतर है।

[11]अनीश, ए., ''खूनी भाषा भारत में भाषाई राष्ट्रवाद का टकराव और निर्माण'' सोशियोलॉजिकल फोरम, 25(1), 2010, पृष्ठः 86–109।
[12]अग्निहोत्री रमा कण, ''लैंग्वेज एंड डायलेक्ट'' लर्निंग चउरव, वॉल्यूम 13, 2009, पृष्ठः 21–23।

पारस दुहान (2022)[13] ने अपने अध्ययन में स्पश्ट किया है कि जब भाषा और साहित्य की बात आती है, तो किसी संस्कृति की समृद्धि को पढ़ने और सुनने से ही समझा जा सकता है। माना जाता है कि ब्राह्मी उर्दू को छोड़कर सभी उत्तरी भारतीय भाषाओं की लिपि के लिए जिम्मेदार है। एक लंबी और थकाऊ प्रक्रिया का परिणाम। वर्तमान में पूरे भारत में 200 से अधिक विभिन्न भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। कुछ बड़े पैमाने पर कार्यरत हैं, जबकि अन्य केवल देश या ग्रह के एक ही स्थान पर पाए जाते हैं। इनमें से केवल बाईस संशोधनों ने इसे हमारे देश के संस्थापक संविधान के पाठ में शामिल किया है। ब्रज भाषा के अलावा अवधी जो अवध क्षेत्र में बोली जाती है, भोजपुरी, मगधी और मैथिली जो मिथिला में बोली जाती है, राजस्थानी जो राजस्थान में बोली जाती है, और खड़ी बोली जो दिल्ली के आसपास बोली जाती है। बड़ी संख्या में लोग इसके विभिन्न रूपों में हिंदी बोलते हैं। एक अन्य लिपि, जिसे ब्राह्मी के नाम से जाना जाता है, भी इस अवधि के दौरान इस क्षेत्र में स्थापित की गई थी और एक ही समय में पूरे भारत और शेष दक्षिण एशिया में उपयोग की जाती थी। भले ही इतिहासकारों, पुरातत्वविदों और पुरालेखविदों की सदियों से ब्राह्मी लिपि में रुचि रही हो, लिपि के विविध रूपों, संरचनाओं और टाइपोग्राफिक विशिष्टताओं को एक वर्णमाला के रूप में ज्यादातर अनदेखा किया गया है और कभी भी इसकी जांच नहीं की गई है। इस पेपर के दायरे में, हम एक प्रकार की लॉगोग्राफी के रूप में ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति को देखेंगे। ब्राह्मी लिपि की विशिष्ट शारीरिक समरूपता और ध्वन्यात्मक तर्क के लिए ऐतिहासिक सराहना मौजूद है। इसने कुछ बाहरी लोगों को यह सोचने के लिए प्रेरित किया है कि यह एक आयात है, फिर भी समय के साथ आम सहमति विकसित हुई है। ब्राह्मी को अब चोरी की लिपि नहीं माना जाता है, बल्कि एक स्वदेशी लिपि माना जाता है जो समय के साथ विकसित हुई। ब्राह्मी एक टाइपोग्राफ़िक इकाई है जो बुनियादी लेकिन सुंदर, बोल्ड अभी तक गीतात्मक है, विशिष्ट लेकिन याद करने में आसान है, स्केल–डाउन होने पर भी सभ्य सुपाठ्यता के साथ सममित है, और टाइपोग्राफ़िक इकाई के रूप में बंद आंखों के साथ स्पर्श करने पर आम तौर पर पहचानना आसान होता है। ब्राह्मी विशिष्ट विशेषताओं की एक विस्तृत श्रृंखला के साथ एक टाइपफेस है। यह अध्ययन तार्किक तत्व के रूप में ब्राह्मी लिपि के इतिहास की पड़ताल करता है।

भाोध के उद्देश्य

- खड़ी बोली के हिन्दी इतिहास का अध्ययन करना।
- खड़ी बोली के उद्ग्म विकास का अध्ययन करना।
- खड़ी बोली हिन्दी के प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन करना।

[13] पारस दुहान, ''ओरिजिन ऑफ़ ब्राह्मी स्क्रिप्ट फ्रॉम लोगोग्रफिक एलिमेंट्सः अन एनालिसिस'', इंटीग्रेटेड जर्नल फॉर रिसर्च इन आर्ट्स एंड हमनीटीएस, 2(5), 2022, प्रष्ठः 18–24।

- खड़ी बोली का विभिन्न भाषाओं पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध प्रबंध हेतु ऐतिहासिक अनुसंधान विधि को अपनाया गया है। शोधकर्ता ने प्राचीन भारतीय शिक्षा से सम्बन्धित शैक्षिक स्थलों, पुस्तकालयों, अध्ययन केन्द्रों से सम्पर्क स्थापित किया है। इस अध्ययन में, हम द्वितीयक स्त्रोत का उपयोग किया जाएगा। यह एक वर्णनात्मक शोध होगा, जिसे डेस्क अनुसंधान के रूप में भी जाना जाता है, इसमें मौजूदा डेटा को विभिन्न स्रोतों से एकत्र किया जाता है और फिर उसका विश्लेषण किया जाता है। इस वर्णनात्मक शोध में पूर्व में प्रकाशित आँकड़े, अध्ययन और सर्वेक्षण, साथ ही वेबसाइटों और पुस्तकालयों की जानकारी शामिल होती है।

वर्णनात्मक शोध में, पहले से एकत्र की गई सामग्री का उपयोग नए निष्कर्षों के पूरक के लिए किया जाता है। अध्ययन की समग्र प्रभावोत्पादकता में सुधार करने के लिए, पूर्व में एकत्र किए गए डेटा को संकलित और सारांशित किया जाता है। इस शोध में अकादमिक पत्रिकाओं, सम्मेलन की कार्यवाही और अन्य प्रकाशनों में मिली जानकारी शामिल है। इस अध्ययन हेतु कुछ गैर–सरकारी और सरकारी संगठनों से भी डेटा को सहेजा जा सकता है।

प्राथमिक शोध की तुलना में, द्वितीयक शोध बहुत अधिक लागत प्रभावी होता है क्योंकि यह आपके लिए इसे एकत्र करने के लिए किसी तीसरे पक्ष पर निर्भर होने के बजाय पहले से प्राप्त किए गए डेटा का उपयोग करता है। प्रस्तुत शोध विषय ''खड़ी बोली का उद्ग्म व विभिन्न भाषाओं का उस पर प्रभाव एवं समाज कार्य हस्तक्षेप द्वारा उसका निराकरण'' के उद्दे यों को पूरा करने हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा। इस अध्ययन में डेटा का वि लेशण करने हेतु साहित्यिक स्त्रोतों एवं ि ालालेखों को अध्ययन किया जाएगा एवं शोध विषय से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों, पत्रिकाओं, ब्लोगों, वेबसाइटों में प्रकाि ात लेखों का प्रयोग किया जाएगा।

खड़ी बोली का उद्भव और विकास

इस लेख में जहाँ एक ओर काव्यभाषा का विकासात्मक और प्रतीतिपरक मूल्यात्मक विवेचन किया गया है वहां दूसरी ओर संवेदना या जनता की चित्तवृत्ति में होने वाले परिवर्तनों के कारण खड़ीबोली के काव्यभाषा के रूप में विकास का भी अत्यंत व्यवस्थित वर्णन है। इस दृष्टि से यह लेख दोहरी अर्थवत्ता रखता है। संवेदना के बदलाव के कारक भाषा के भी बदलाव के कारक होते हैं। 'नई चाल' में ढलने के पूर्व खड़ी बोली ने कई मंज़िलें पार कीं और धर्म, राजनीति, शिक्षा, प्रचार–प्रसार तथा छापेखाने आदि के

माध्यम से संवाद और विमर्श की भाषा के रूप में गद्य में विकसित हुई। गद्य भाषा के रूप में ब्रजभाषा की विफलता और खड़ीबोली की सफलता का यह इतिहास काफी रोचक और हिन्दी साहित्य तथा हिन्दी जाति की प्रतिष्ठा की दृष्टि से अत्यंत सार्थक है।

खड़ीबोली काव्य आन्दोलन और स्वच्छंदतावादी काव्यधारा के दौर में छायावाद के पूर्व खड़ीबोली किस प्रकार शैशवावस्था से किशोरावस्था को प्राप्त कर रही थी इसका संकेत श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी, हरिऔध मैथिलीशरण गुप्त और रामचरित उपाध्याय आदि की कृतियों और महावीर छायावाद द्विवेदी की संपादन क्षमता सामर्थ्य और अनुशासन प्रियता तथा खड़ीबोली के मानकीकरण के प्रयत्नों के विवेचन क्रम में अनेक उदाहरणों मे मिलता है। छायावाद को जिस प्रकार की काव्यभाषा मिली थी उसे इन कवियों ने, और अधिक भाव–विचार–सम्प्रेषणक्षम बनाया है। ब्रजभाषा की कोमलता और मसृणता को खड़ी बोली में अन्तरिम करने के प्रयत्न में कविता की महत्वपूर्ण भूमिका है यह छायावाद के माध्यम से ही समझा जा सकता है। छायावाद ने हिन्दी में लाक्षणिकता संकेतपरकता और चित्रात्मकता को जिस प्रकार सूक्ष्म अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त करते हुए भाषा की अन्तर्निहित शक्ति के स्रोत का उद्घाटन किया यह भाषा, काव्य, चिंतन और प्रगति अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

यह लेख इस अर्थ में नयी स्थापना करता है। और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की स्थापनाओं का विनम्रतापूर्वक सतर्क ढंग से प्रत्याख्यान भी करता है। शोधपरकता और विश्लेषण क्षमता का यह लक्षण होता है कि वह उस संभावना को भी रेखांकित करती चलती है जिससे महत्त्वपूर्ण कृतियाँ विकसित होती हैं। छायावादी कवियों की कृतियों की काव्यभाषा के मूल्यांकन में इसका संकेत बराबर मिलता है। छायावाद के कवि व्यक्तित्व और उनकी काव्यभाषा का क्रमिक विकास कैसे हुआ इस लेख में कालक्रमिक और मूल्यक्रमिक ढंग से प्रतिपादित किया गया है। छायावाद की प्रारंभिक कृतियों से अनेक उदाहरणों द्वारा यह सिद्ध किया जा सकता है कि अन्ततः एक बड़े कवि की खोज, भाषा की ही खोज होती है। मेरा मानना है इस लेख के द्वारा केवल छायावाद और छायावाद की काव्यभाषा क्षमता को ही नहीं समझा जा सकता है बल्कि खड़ीबोली की संभावना को भी रेखांकित किया जा सकता है।

खड़ीबोली के बीज प्राचीन काल से ही सिद्धों और नाथों की रचनाओं में मिलने लगते हैं किन्तु आधुनिक काल से पूर्व यह परम्परा मिश्रित रूप में ही मिलती है। इस प्रकार खड़ीबोली का इतिहास यद्यपि पुराना है, लेकिन उसके काव्यभाषा बनने और काव्यभाषा के रूप में पूर्ण स्वयत्तता प्राप्त करने का इतिहास अपेक्षाकृत आधुनिक है। बढ़ती हुई राष्ट्रीयता की भावना जहाँ एक ओर हिन्दी कविता को मध्यकालीन भक्ति और श्रृंगार से अलगाती है, वहीं उससे जुड़ी खड़ीबोली को काव्यभाषा के रूप में स्वीकृति मिलती है। आधुनिक काल से पूर्व गद्य की परम्परा नहीं के बराबर थी, साथ ही हमारा अधिकांश साहित्य ब्रजभाषा में

मिलता है। इस प्रकार खड़ीबोली की प्रतिष्ठा और गद्य की विभिन्न विधाओं का विकास–ये दो महत्त्वपूर्ण बदलाव आधुनिक काल में दिखाई देते हैं। यह रोचक तथ्य है कि गद्यभाषा के रूप में खड़ीबोली की प्रतिष्ठा अत्यन्त सहज रूप में हो गई किन्तु काव्यजगत में उसके प्रयोग का एक लम्बा इतिहास है। भारतेन्दु युग में जबकि गद्यभाषा के रूप में खड़ीबोली पूर्णतः प्रतिष्ठित हो गई थी, काव्य जगत् में ब्रजभाषा का ही एकाधिकार रहा। भाषा का यह द्वैत भारतेन्दु के बाद खड़ीबोली काव्यान्दोलन को जन्म देता है और द्विवेदी युग में महावीर छायावाद द्विवेदी के प्रयत्नों से काव्यभाषा के रूप में उसे स्वीकृति मिलती है।

चूँकि आधुनिक काव्य का आरम्भ ब्रजभाषा से होता है, अतरू आरम्भिक खड़ीबोली काव्य पर ब्रजभाषा का प्रभाव भी स्वाभाविक था। पं. श्रीधर पाठक से लेकर अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, मैथिलीशरण गुप्त, नाथूराम शंकर शर्मा, रायदेवी छायावाद पूर्ण और लोचन प्रसाद पाण्डेय आदि खड़ीबोली के छोटे–बड़े कवि रचनाकारों के साथ स्वयं महावीर छायावाद द्विवेदी की आरम्भिक खड़ीबोली रचनाएँ ब्रजभाषा के प्रभाव से एकदम अछूती नहीं है। खड़ीबोली रचनाएँ ब्रजभाषा के संस्कार से मुक्त कर व्यवस्थित करने के प्रयास में द्विवेदी युग में जो खड़ीबोली आती है वह इतिवृत्तात्मकता का संस्कार लिये आती है और इस इतिवृत्तात्मकता से मुक्ति छायावाद की काव्यभाषा को जन्म देता है। काव्यभाषा के रूप में खड़ीबोली की इस विकास प्रक्रिया का विश्लेषण प्रस्तुत शोघ प्रबन्ध का एक पक्ष है।

आधुनिक खड़ीबोली काव्यभाषा का यह विकास क्रम छायावाद के काव्य में सर्वाधिक स्पष्ट होता है। छायावाद के कवि पहले ब्रजभाषा में लिखते थे, अतरू उनकी आरम्भिक खड़ीबोली रचनाओं पर ब्रजभाषा का प्रभाव है। 'इन्दु' में समय–समय पर प्रकाशित प्रसाद की ब्रजभाषा कविताएँ 'चित्राधार' में संकलित हुई। ब्रजभाषा में लिखा गया उनका कथाकाव्य 'प्रेमपथिक' आठ वर्ष बाद खड़ीबोली में लिखा गया। 'काननकुसुम' की खड़ी बोली रचनाओं पर भी एक ओर ब्रजभाषा का प्रभाव है तो दूसरी ओर अधिकांश कविताओं की शैली इतिवृत्तात्मक है। इसी प्रकार 'झरना' की अनेक कविताएँ जबकि छायावाद की प्रवृत्तियां सबसे पहले झरना में दिखाई दीं द्विवेदीयुगीन इतिवृत्तात्मकता से मुक्त नहीं है। 'झरना' के बाद 'आंसू', 'लहर' और 'कामायनी' कवि की तीन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कृतियाँ छायावाद का प्रतिनिधित्व करती हैं। छायावाद की रचनाओं के इस क्रमिक विकास का अध्ययन खड़ीबोली काव्यभाषा के संदर्भ में और भी प्रासंगिक हो जाता है। काव्यभाषा के रूप में खड़ीबोली की विकास प्रक्रिया के विश्लेषण के बाद इस विकास क्रम में छायावाद–काव्य का अध्ययन नितांत आवश्यक है जो निरूसन्देह पूर्व पक्ष से अभिन्न रूप में सम्पृक्त है अथवा यों कहा जा सकता है जिसका विकास पूर्व पक्ष की पृष्ठभूमि में होता है।

खड़ीबोली से पूर्व ब्रजभाषा की समृद्ध काव्य परम्परा थी। पूर्व मध्यकाल और उत्तर मध्यकाल में काव्यभाषा के पद पर एकाधिकार रखने वाली ब्रजभाषा को पदच्युत कर काव्यभाषा के रूप में खड़ीबोली की

प्रतिष्ठा अनायास और अप्रत्याशित नहीं थी। इसके विकास के पीछे अनेक कारण थे। आधुनिक युग में बदलती हुई परिस्थितियाँ किस प्रकार बदली हुई उन परिस्थितियों का विवेचन प्रथम अध्याय के अन्तर्गत पृष्ठभूमि के रूप में किया गया है।

खड़ीबोली के प्रयोग की परम्परा यद्यपि प्राचीन है किन्तु प्रस्तुत अध्ययन आधुनिक खड़ीबोली काव्यभाषा से सम्बन्धित है। भारतेन्दु युग में गद्यभाषा के रूप में खड़ीबोली की प्रतिष्ठा किन्तु काव्य जगत में ब्रजभाषा का प्रयोग फिर महावीर प्रसाद द्विवेदी का आगमन और खड़ीबोली को ब्रजभाषा तथा अन्य प्रान्तीय शब्दों के प्रभाव से मुक्त कर व्याकरणबद्ध करना, अन्ततः व्यवस्था के इस क्रम में द्विवेदी युगीन इतिवृत्तात्मकता से मुक्ति का संकेत और छायावाद का आरम्भ–काव्यभाषा के रूप में खड़ीबोली के इस पूरे विकास को दर्शाता है।

प्रसाद के पहले खड़ीबोली काव्य संग्रह 'काननकुसुम' में संकलित 'प्रथम प्रभात' कई अर्थों में द्विवेदीयुग की इतिवृत्तात्मक शैली से अलग नई काव्य क्षमता का संकेत देती है जिसका विकास आगे चलकर छायावाद में होता है। एक ओर मैथिलीशरण गुप्त और मुकुटधर पाण्डेय में छायावाद का पूर्वाभास मिलने लगता है, तो दूसरी ओर निराला की 'जुही की कली' और पंत के 'पल्लव' में यह नई काव्य क्षमता खड़ीबोली को नया स्वर देती है। द्विवेदीयुग की इतिवृत्तात्मकता से छायावाद की चित्रात्मकता और बिम्ब क्षमता का काव्यभाषिक विश्लेषण तृतीय अध्याय के अन्तर्गत किया गया है।

प्रसाद पहले कवि है जिनकी रचनाओं में छायावाद की प्रवृत्तियाँ दिखाई दीं। 'चित्राधार' से लेकर 'कामायनी' तक छायावाद की काव्यभाषा का विकास आधुनिक खड़ीबोली काव्यभाषा के विकास क्रम को दर्शाता है। ब्रजभाषा से खड़ीबोली में लिखने का प्रयास और प्रयास की इस प्रक्रिया में उनकी आरम्भिक खड़ीबोली रचनाओं पर ब्रजभाषा का प्रभाव, साथ ही द्विवेदीयुग की इतिवृत्तात्मक शैली का संस्कार स्पष्टतरू देखा जा सकता है। आगे चलकर 'जुही की कली' 'पल्लव' 'आँसू' 'लहर' और 'कामायनी' में छायावाद की काव्यभाषा का विकास दिखाई देता है। छायावाद की काव्यभाषा का यह विवेचन काव्यभाषा के सैद्धान्तिक पक्ष की अपेक्षा व्यावहारिक धरातल पर अधिक है। छायावाद के रूप में खड़ीबोली को अपना पूर्ण वैभव प्राप्त होता है। महाकाव्य के नूतन कलेवर में कामायनी न केवल अपने समय की बल्कि हिन्दी काव्य जगत की महानतम उपलब्धि के रूप में सामने आती है। 'आँसू' की सूक्ष्म प्रबन्ध कल्पना और 'लहर' की गीतसृष्टि खड़ीबोली काव्य में शिल्प के नये आयाम जोड़ती है। आधुनिक खड़ीबोली काव्यभाषा के विकास में छायावाद के इस योगदान सर्वविदित है।'[14]

[14]वामनकर मिथिलेश, ''खड़ीबोली का विकास'' शब्दशिल्पी, 2008। अधिकारिक बेवसाइटः https://vimisahitya.wordpress.com/

खड़ी बोली का विभिन्न भाषाओं का उस पर प्रभाव

खड़ी बोली, जिसे खड़ी बोली या केवल खड़ी के रूप में भी जाना जाता है, हिंदी की एक बोली है जो भारत के उत्तरी क्षेत्रों में उत्पन्न हुई, विशेष रूप से दिल्ली में और उसके आसपास। भारतीय उपमहाद्वीप में विभिन्न भाषाओं के विकास पर इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। यहाँ विभिन्न भाषाओं पर खादी बोली के प्रभाव का अवलोकन दिया गया हैः

खडी बोली का विभिन्न भाषाओं पर प्रभाव निम्नलिखित है।

हिंदीः खड़ी बोली को हिंदी की आधार बोली माना जाता है। इसने मानक हिंदी के विकास में एक प्रमुख प्रभाव के रूप में कार्य किया, जो भारत की आधिकारिक भाषा है। खड़ी बोली ने मानक हिंदी के लिए व्याकरणिक और शाब्दिक आधार प्रदान किया और आधुनिक हिंदी का एक महत्वपूर्ण घटक बना हुआ है।

उर्दूः खड़ी बोली ने उर्दू के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो भारत की एक और आधिकारिक भाषा और पाकिस्तान की राष्ट्रीय भाषा है। उर्दू फारसी, अरबी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के साथ खड़ी बोली के मिश्रण के रूप में विकसित हुई। खड़ी बोली की शब्दावली और व्याकरण ने विशेष रूप से इसके बोलचाल के रूप में उर्दू को काफी प्रभावित किया।

हिंदुस्तानीः खड़ी बोली ने हिंदुस्तानी के निर्माण में योगदान दिया, एक ऐसी भाषा जो खड़ी बोली और फारसी के मिश्रण के रूप में उभरी। हिंदुस्तानी मुगल युग के दौरान उत्तर भारत की भाषा बन गई। यह बाद में हिंदी और उर्दू में विभाजित हो गया, साथ ही खड़ी बोली दोनों भाषाओं की नींव बनी रही।

ब्रजभाषाः उत्तर प्रदेश और राजस्थान के ब्रज क्षेत्र में बोली जाने वाली बोली ब्रजभाषा पर खड़ी बोली का गहरा प्रभाव था। ब्रज भाषा, जो अपने समृद्ध साहित्य और कविता के लिए जानी जाती है, शब्दावली, व्याकरण और वाक्य रचना के संदर्भ में खड़ी बोली से बहुत अधिक उधार ली गई है।

हरियाणवीः हरियाणवी, भारतीय राज्य हरियाणा में बोली जाने वाली भाषा, खड़ी बोली के साथ महत्वपूर्ण समानता रखती है। यह खड़ी बोली से काफी प्रभावित है और एक सामान्य व्याकरणिक संरचना और शब्दावली साझा करता है।

राजस्थानीः राजस्थान राज्य में बोली जाने वाली राजस्थानी की विभिन्न बोलियाँ खड़ी बोली से प्रभावित हैं। प्रभाव उनकी शब्दावली, व्याकरण और ध्वन्यात्मकता में स्पष्ट है।

गुजराती भाषाः खड़ी भाषा और गुजराती भाषा में काफी सामान्यताएं होती हैं, क्योंकि दोनों भाषाओं का उद्भव और विकास एक ही क्षेत्र में हुआ है। खड़ी भाषा और गुजराती भाषा के बीच शब्दावली, वाक्य रचना, व्याकरण नियम आदि में समानताएं पाई जा सकती हैं।

मराठी भाषाः खड़ी भाषा का मराठी भाषा पर प्रभाव हुआ है, क्योंकि यह दोनों भाषाओं के बीच भूमिका–भाग विभाजन क्षेत्र में स्थित हैं। खड़ी भाषा और मराठी भाषा के बीच शब्द सामर्थ्य, वाक्य रचना, व्याकरण आदि में समानताएं देखी जा सकती हैं।

अंग्रेजी भाषाः खड़ी भाषा का अंग्रेजी भाषा पर भी प्रभाव हुआ है, क्योंकि इसमें अंग्रेजी के कुछ शब्दों का प्रयोग होता है। इसका कारण खड़ी नदी घाटी में अंग्रेजी के सांस्कृतिक और आर्थिक प्रभाव के कारण हो सकता है।

सिंधी भाषाः खड़ी भाषा और सिंधी भाषा के बीच भी कुछ समानताएं होती हैं। यह दोनों भाषाओं के बीच क्षेत्रीय संबंधों के कारण हो सकता है। खड़ी भाषा में सिंधी शब्दों का प्रयोग होता है और इसमें सिंधी भाषा के व्याकरण नियमों का भी प्रभाव देखा जा सकता है।

हालाँकि इन भाषाओं पर खड़ी बोली का प्रभाव पड़ा है, लेकिन समय के साथ इनमें से प्रत्येक में विशिष्ट विशेषताएं विकसित हुई हैं। किसी भाषा के विकास में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक तत्वों सहित कई तत्वों की भूमिका होती है।[15]

निष्कर्ष

यह अध्ययन खडी बोली की गहरी ऐतिहासिक और भाषाई पृष्ठभूमि का पता लगाएगा, इसकी भाषाई जड़ों और इसके विकास पर पड़ोसी भाषाओं के प्रभाव की जांच करेगा। खडी बोली का भाषाई और सांस्कृतिक महत्व भारत के भाषाई परिदृश्य की समृद्धि और विविधता के साथ–साथ इसके चल रहे विकास और परिवर्तन पर प्रकाश डालता है। इस शोध के परिणामों का उपयोग भारत की भाषाई विरासत के एक महत्वपूर्ण हिस्से खड़ी बोली को बचाने और लोकप्रिय बनाने में मदद के लिए किया जा सकता है।

[15] महावीर सरन जैन, ''भारत की भाषाओं के अध्ययन की रूपरेखा एवं भाषाओं के विवरण के आधार'', 2013, अधिकारिक बेबसाइट

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आनंद ज्योत्स्ना, ''खड़ी बोली और साहित्यिक भाषा के रूप में उसका विकास'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिंदी रिसर्च, 7(4), 2021, पृष्टः 154–155।

हिन्दीकुंज, ''खड़ी बोली हिंदी का उद्भव व विकास'', अधिकारिक बेवसाइटः https://www.hindikunj.com/2018/01/khadi-boli-hindi.html

आनंद ज्योत्स्ना, ''खड़ी बोली और साहित्यिक भाषा के रूप में उसका विकास'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिंदी रिसर्च, 7(4), 2021, पृष्टः 154–155।

सिह ओमप्रकाश, ''साहित्यिक भाषा के रूप में खड़ी बोली का विकास'' पाठशाला, 2020। अधिकारिक बेवसाइटः https://epgp.inflibnet.ac.in/

वामनकर मिथिलेश, ''खड़ीबोली का विकास'' शब्दशिल्पी, 2008। अधिकारिक बेवसाइटः https://vimisahitya.wordpress.com/

सुनीता शर्मा, ''खड़ी बोली की व्याकरणिक विशेषताएं'', भाषा और साहित्य, 12(2), 2019, 135–142।

रानी, शिक्षा, ''हिन्दी भाषा का अतीत एवं वर्तमान तथा इक्कीसवीं शताब्दी में हिन्दी भाषा का वैश्विक स्वरूप'', जर्नल ऑफ एडवांसेज एंड स्कॉलरली रिसर्चेस इन अलाइड एजुकेशन, 15(9), 2018, पृष्ठः 631–634।

मोदी, सुजाता एस., ''आधुनिक हिंदी मे ं साहित्यिक सत्ता के लिए दृश्य रणनीतियाँ'' साउथ एशियाः जर्नल ऑफ साउथ एशियाई स्टडीज', 37(3), 2014, पृष्ठः 474–490।

बेरेक, पायोत्र., ''आधुनिक हिंदी में साहित्यिक सत्ता के लिए दृश्य रणनीतियाँ'' 'साउथ एशियाः जर्नल ऑफ साउथ एशियाई स्टडीज',(15), 2013, पृष्ठः 249–264।

बाला अंजू, ''हिन्दी गद्य का उदय और नवजागरण'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन आल सब्जेक्ट्स इन मल्टी लैंग्वेजेज, 1(8), 2013, पृष्ठः49–55।

मिश्रा, दिवाकर एवं बाली, कालिका, ''हिंदी की बोलियों का एक तुलनात्मक ध्वन्यात्मक अध्ययन'' इंटरनेशनल कांग्रेस ऑफ फोनेटिक साइंसेज,17(21), 2011, पृष्ठः1390–1393।

अनीश, ए., ''खूनी भाषा भारत में भाषाई राष्ट्रवाद का टकराव और निर्माण'' सोशियोलॉजिकल फोरम, 25(1), 2010, पृष्ठः 86–109।

अग्निहोत्री रमा कण, ''लैंग्वेज एंड डायलेक्ट'' लर्निंग चउरव, वॉल्यूम 13, 2009, पृष्ठः 21–23।

पारस दुहान, ''ओरिजिन ऑफ़ ब्राह्मी स्क्रिप्ट फ्रॉम लोगोग्रफिक एलिमेंट्सः अन एनालिसिस'', इंटीग्रेटेड जर्नल फॉर रिसर्च इन आर्ट्स एंड हमनीटीएस, 2(5), 2022, प्रष्ठः 18–24।

महावीर सरन जैन, ''भारत की भाषाओं के अध्ययन की रूपरेखा एवं भाषाओं के विवरण के आधार'', 2013, अधिकारिक बेबसाइट